ALL RIGHTS RESERVED © جميع حقوق الطبع محفوظة

First Edition: May 2003

© مكتبة دارالسلام، ١٤٢٤

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

آل الشيخ، صالح بن عبدالعزيز

غاية المريد في شرح كتاب التوحيد. / صالح بن عبدالعزيز آل الشيخ - الرياض، ١٤٢٤ هـ

٢٥٦ ص ١٤×٢١ سم

ردمك: ٨-٣٢-٨٩٢-٩٩٦٠

(النص باللغة الهندية)

١- التوحيد ٢- العقيدة الاسلامية أ- العنوان

ديوي: ٢٤٠ ١٤٢٤/٩٦٩

رقم الإيداع: ١٤٢٤/٩٦٩

ردمك: ٨-٣٢-٨٩٢-٩٩٦٠

Headoffice: P.O. Box: 22743, Riyadh 11416 K.S.A.

Tel: 00966-01-4033962/4043432 Fax: 4021659

E-mail: darussalam@naseej.com.sa Website: www.dar-us-salam.com

K.S.A. Darussalam Showrooms

Riyadh

- Tel 00966-1-4614483 Fax: 4644945

Jeddah

- Tel: 00966-2-6879254 Fax: 6336270

Al-Khobar

- Tel: 00966-3-8692900 Fax: 00966-3-8691551

U.A.E

- Darussalam, Sharjah U.A.E

Tel: 00971-6-5632623 Fax: 5632624

PAKISTAN

- Darussalam, 32 B Lower Mall, Lahore

Tel: 0092-42-724 0024 Fax: 7354072

U.S.A

- Darussalam, Houston

P.O Box: 79194 Tx 772779

Tel: 001-713-722 0419 Fax: 001-713-722 0431

E-mail: sales@dar-us-salam.com

- Darussalam, New York

572 Atlantic Ave, Brooklyn

New York-11217, Tel: 001-718-625 5925

U.K

- Darussalam International Publications Ltd.

226 High Street, Walthamstow,

London E17 7JH, Tel: 0044-208 520 2666

Mobile: 0044-794 730 6706

Fax: 0044-208 521 7645

- Darussalam International Publications Limited

Regent Park Mosque, 146 Park Road,

London NW8 7RG Tel: 0044-207 724 3363

- Darussalam

398-400 Coventry Road, Small Heath

Birmingham, B10 0UF

Tel: 0121 77204792 Fax: 0121 772 4345

E-mail: info@darussalamuk.com

Web: www.darussalamuk.com

MALAYSIA

- E&D Books SDN. BHD.-321 B 3rd Floor,

Suria Klcc

Kuala Lumpur City Center 50088

Tel: 00603-21663433 Fax: 459 72032

SINGAPORE

- Muslim Converts Association of Singapore

32 Onan Road The Galaxy Singapore- 424484

Tel: 0065-440 6924, 348 8344 Fax: 440 6724

SRI LANKA

- Darul Kitab 6, Nimal Road, Colombo-4

Tel: 0094-1-589 038 Fax: 0094-74 722433

KUWAIT

- Islam Presentation Committee

Enlightment Book Shop

P.O. Box: 1613, Safat 13017 Kuwait

Tel: 00965-244 7526, Fax: 240 0057

غاية المريد في شرح كتاب التوحيد

ग़ायतुल मुरीद
शरह
किताबुत तौहीद

तालीफ

फ़ज़ीलतुश शैख़ सालेह बिन अब्दुल अज़ीज़ बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम आले शैख़

मंत्री इस्लामिक विषय एवं औकाफ़ दावत व इरशाद सऊदी अरब

अनुवादक

मुहम्मद ताहिर सलफ़ी

दारूस्सलाम

प्रकाशक एवं वितरक

रियाध- सऊदी अरब

विषय सूची

भूमिका और कुछ महत्वपूर्ण परिभाषायें ०७
तौहीद (एकेश्वरवाद) के विषय में ०९
तौहीद की प्रधानता और यह कि वह पापों को मिटा देती है १६
जो वास्तविक तौहीद रखेगा बिना हिसाब के स्वर्ग में प्रवेश पायेगा २१
शिर्क (मिश्रण) से डरने का विषय २७
ला इलाहा इल्लल्लाह का आमंत्रण देने का विषय ३२
तौहीद (अद्वैत) तथा ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही देने का अर्थ ३८
आपत्ति के निवारण के लिए कड़ा तथा धागा आदि पहनना शिर्क है ४४
यंत्रों तथा मंत्रों के विषय में ५०
जो पेड़ पत्थर आदि से शुभ प्राप्त करता हो ५५
अल्लाह के सिवाय किसी अन्य के लिए बलि देने के विषय में ६४
जिस स्थान में अल्लाह के सिवाय के लिए बलि दी जाये वहाँ अल्लाह के लिए बलि न दी जाये ७०
अल्लाह के सिवाय के लिए मनौती शिर्क है ७४
अल्लाह के सिवाय से शरण चाहना शिर्क है ७६
अल्लाह के सिवाय से गुहार करना या दुआ करना शिर्क है ७८
अल्लाह का कथन "कि क्या वह उसे अल्लाह का साझी बनाते हैं जो कुछ बना ही नहीं सकते" ८३
अध्याय ८९
शफ़ाअत (अभिस्तावना) का विषय ९४
अल्लाह का कथन "आप उसे मार्गदर्शन नहीं दे सकते जिसे चाहते हों" १००
इस बात का वर्णन कि इंसानों के अधर्म तथा धर्म त्याग का कारण सदाचारियों के सम्बन्ध में अत्यधिक है १०४
जब किसी धर्माचारी की समाधि के पास अल्लाह की इबादत घोर पाप है तो उसकी पूजा करना कितना बड़ा पाप होगा ११०
धर्माचारियों की समाधियों के सम्बन्ध में अति उसे अल्लाह के सिवाय पूज्य मूर्ति बना देती है ११७
मुस्तफ़ा ﷺ ने तौहीद (अद्वैत) की चारदीवारी की रक्षा कैसे की तथा शिर्क तक पहुँचने के मार्ग को कैसे बंद किया १२०
इस उम्मत के कुछ लोग मूर्तियाँ पूजेंगे १२३
जादू के विषय में १३०
जादू के कुछ भेदों का वर्णन १३४
काहिनों आदि के विषय में १३८
जादू उतारने के विषय में १४२
शगुन लेने के विषय में १४४
ज्योतिष का अध्याय १४८
नक्षत्रों से वर्षा होने पर विश्वास १५१
अध्याय १५५
अध्याय १५९
अध्याय १६२
अध्याय १६४
इस बात का वर्णन कि अल्लाह पर ईमान में भाग्य संतोष भी है १६६
पाखण्ड (दिखावा) का वर्णन १७०
इंसान का अपने पुण्यकर्म से दुनिया चाहना शिर्क है १७३
यह विषय कि जिस ने विद्वानों तथा प्रशासकों की आज्ञापालन वैध को निषेध तथा निषेध को वैध करने में की उसने उसको प्रभू बना दिया १७६
अध्याय १७९
जो अल्लाह के किसी नाम और विशेषणों का इंकार करता है १८२
अध्याय १८४
अध्याय १८६

जो अल्लाह की कसम खाने पर संतुष्ट न हो १९०
जो अल्लाह चाहे तथा जो तुम चाहो बोलने का विषय १९२
जिसने युग को अपशब्द कहा उसने अल्लाह को पीड़ा दी १९५
न्यायकारियों का न्यायकारी आदि नाम रखना १९७
अल्लाह के नामों का आदर तथा उसके लिए नाम बदल देना १९९
जो किसी ऐसी वस्तु का उपहास उड़ाये जिस में अल्लाह की, क़ुरआन की और रसूल की बात हो २०१
अध्याय २०३
अध्याय २०९
अध्याय २१२
अल्लाह पर सलाम कहने का निषेध २१४
हे अल्लाह यदि तू चाहे तो क्षमा कर दे कहना २१६
दास तथा दासी नहीं कहना चाहिए २१८
जो अल्लाह के नाम पर माँगे उसे फेरा न जाये २२०
अल्लाह को प्रसन्न करके स्वर्ग की माँग करनी चाहिए २२२
"लौ" (यदि) के विषय में २२३
वायु को गाली देने से निषेध २२५
अध्याय २२७
भाग्य के इंकार का विषय २३०
चित्रकारों के विषय में २३४
अधिक क़सम (शपथ) खाने का विषय २३७
अल्लाह तथा उस के नबी की जिम्मेदारी के विषय में २४०
अल्लाह पर शपथ लेने का विषय २४४
अल्लाह की सिफ़ारिश किसी के पास न ले जानी चाहिए २४६
नबी ﷺ का तौहीद की रक्षा करना तथा शिर्क के द्वार बंद करना २४८
अध्याय २५०

भूमिका और कुछ महत्वपूर्ण परिभाषायें

तौहीद के विद्वानों की इस बात पर सहमति है कि तौहीद (एकेश्वरवाद) के विषय में किताबुत तौहीद जैसी किताब इस्लाम में नहीं लिखी गई, यह किताब इस विषय की ओर आमन्त्रण देती है, इसलिए कि शैख़ -मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब ﷺ- ने इसमें तौहीद की तर्कों के सिद्धान्त, तौहीद का अर्थ और उसकी श्रेष्ठता बयान की है, उसके अतिरिक्त एकेश्वरवाद के विपरीत वस्तुओं और उनसे बचाव के कारणों का भी वर्णन है, इसी प्रकार संक्षिप्त रूप से तौहीद इबादत (केवल एक अकेले अल्लाह को पूजना) और अल्लाह के नामों एवं विशेषताओं में उसको अकेला समझने का भी बयान है, छोटे एवं बड़े शिर्क, उसकी रूप-रेखा, उसके कारणों एवं साधनों का भी वर्णन है।

तौहीद की सुरक्षा और उसके साधनों एवं उसके कुछ भेदों का भी विवरण दे दिया है, चूंकि यह एक महान पुस्तक है इसलिए उसे पढ़ने, याद करने और उसके पाठों में विचार करके उसका सम्मान करना चाहिए, इस प्रकार आप जहाँ कहीं रहेंगे उसकी आवश्यकता आप को रहेगी।

किताबुत तौहीद

तौहीद से अभिप्राय किसी वस्तु को इकट्ठा करना है "وحَّد المسلمون الله" का अर्थ है : "मुसलमानों ने अल्लाह तआला को एक अकेला पूज्य माना।"

अल्लाह तआला की किताब में तौहीद से अभिप्राय उसके निम्नलिखित तीन प्रकार है:

१. **तौहीद रुबूबियत** (अल्लाह अकेला प्रभु है)

२. **तौहीद उलूहियत** (अल्लाह अकेला पूज्य है)

३. **तौहीद अस्मा व सिफ़ात** (अल्लाह अपने नामों एवं विशेषताओं में अकेला है, उस जैसा कोई नहीं)

तौहीद रुबूबियत: उसका अर्थ यह है कि अल्लाह तआला को उसके कार्यों में एक और अकेला मानना, अल्लाह के कार्य बहुत हैं, उन में कुछ यह है: पैदा करना, जीविका देना, जीवन एवं मृत्यु देना। इन सभी चीजों में वह पूर्णरूप से एक और अकेला है।

तौहीद उलूहियत: उसका अर्थ यह है कि वह पूज्य जिसकी प्रेम और सम्मान के साथ पूजा की जाये, अर्थात सेवकों के कार्यों को केवल अल्लाह तआला के लिए विशेष करना।

तौहीद अस्मा व सिफ़ात: उसका अर्थ यह है कि बन्दा यह विश्वास रखे कि अल्लाह तआला अपने नामों एवं विशेषताओं में अकेला है, उन नामों और विशेषताओं में कोई उसके समान नहीं।

लेखक ﷺ ने इस किताब में तौहीद के उपरोक्त तीनों भेदों का वर्णन किया है और उन भेदों में बन्दों को जिस भेद की अधिक आवश्यकता है, चूँकि उस में ज़्यादा किताबें नहीं पाई जातीं इसलिए उस को विस्तारपूर्वक बयान किया है, वह तौहीद इबादत अथवा तौहीद उलूहियत है, अत: उसके स्तम्भ जैसे भरोसा, डर और प्रेम आदि की व्याख्या की है और इसके विपरीत जो शिर्क है उसको भी बयान किया है। शिर्क यह है कि अल्लाह के एकेश्वरवाद होने उसके अकेले पूज्य होने, या उसके नामों एवं विशेषताओं में उसके साथ अन्य को साझी बनाया जाये, इस किताब के लिखने का उद्देश्य भी यही है कि इबादत में अल्लाह तआला के साथ किसी को साझी मानने से रोकना और केवल उसी की इबादत का आदेश देना।

क़ुरआन व हदीस से प्रमाणित तर्क इस बात को बतलाते हैं कि शिर्क दो प्रकार के हैं: १. बड़ा २. छोटा और एक एतबार से उसके तीन प्रकार हैं : १. बड़ा शिर्क २. छोटा शिर्क ३. छिपा शिर्क

बड़ा शिर्क : वह है जिसके करने से बन्दा धर्म से निष्कासित हो जाता है, उसका अर्थ यह है कि अल्लाह तआला के साथ अन्य की भी पूजा की जाये अथवा इबादत में से कुछ अल्लाह के अतिरिक्त की ओर फेर दिया जाये, अथवा इबादत में अल्लाह तआला के साथ किसी को उसका साझी माना जाये।

छोटा शिर्क : वह है जिस पर धर्मशास्त्र ने शिर्क का आदेश लगाया है, परन्तु उसमें किसी को पूर्ण साझीदार नहीं माना जाता जो उसको बड़े शिर्क के साथ मिला दे।

यह स्पष्ट रहे कि बड़ा शिर्क प्रत्यक्ष भी है जैसे मूर्तियों, मजारों, मृतकों के पूजकों का शिर्क, और अप्रत्यक्ष भी, जैसे मुनाफ़िक़ों का शिर्क, या विद्वानों, मृतकों और झूठे पूज्यों पर भरोसा करने वालों का शिर्क। यह शिर्क छिपा है और छिपी स्थिति में यह बड़ा है, जाहिर में नहीं। इसके अतिरिक्त कड़े, धागे और यन्त्र आदि पहनना, अल्लाह के अन्य की सौगन्ध खाना भी छोटे शिर्क में सम्मिलित है।

छिपा शिर्क: इससे तात्पर्य छोटे प्रकार के दिखावे और इसी तरह की अन्य त्रुटियाँ हैं।

तौहीद (एकेश्वरवाद के विषय में)

अल्लाह का कथन है :

﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ﴾

और मैंने जिन्नों तथा इंसानों को मात्र अपनी इबादत (उपासना) के लिए पैदा किया।[1] (सूरतुज़्ज़ारियात:५६)

तथा उसका कहना है कि:

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾

निश्चय हम ने प्रत्येक समुदाय में दूत भेजा कि अल्लाह की इबादत (उपासना) करो और अवैज्ञा कारी से बचो।[2] (सूरतुन-नहल:३६)

तथा उसका कहना है :

---

[1] मैंने मानव और जिन्नों को केवल अपनी उपासना के लिए पैदा किया। असलाफ़ (सहावा, ताबईन आदि) ने ﴿لِيَعْبُدُونِ﴾ की व्याख्या (ليوحدون) से की है, अर्थात मैंने जिन्नों और इंसानों को केवल इसलिए पैदा किया है कि वे मेरे ऐकश्वरवाद का इक़रार और प्रसार करें।

इस से यह भी ज्ञात हुआ कि प्रत्येक ईशदूत "तौहीद इबादत" को समझाने के लिए भेजे गये थे।

[2] यह आयत इबादत (उपासना) और तौहीद (एकेश्वरवाद) के अर्थ का विवरण है, इस से यह भी मालूम हुआ कि सारे रसूल और अम्बिया उपरोक्त दो बातों की शिक्षा के लिए भेजे गये, प्रथम अल्लाह की उपासना करो, द्वितीय ताग़ूत (झूठे पूज्य) की उपासना से दूर रहो, इसी को तौहीद कहते हैं। इस आयत के प्रथम भाग ﴿اعْبُدُوا اللَّهَ﴾ में तौहीद का इक़रार और दूसरे भाग्य ﴿وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾ में शिर्क (बहुदेववाद) का इंकार है।